06-07-18 की मुरली से होमवर्क, अनुभूति, सावधानी और प्रश्नोत्तरी

निरन्तर इसी अनुभूति में रहना है कि हमारा बाप, टीचर और सतगुरू - तीनों ही रूप हमारे साथ कम्बाइन्ड है.. हमें खुशी का पारा चढ़ा हुआ है .

प्रश्न - ब्राह्मणों का पहला लक्षण कौन सा है?
उत्तर - ब्राह्मणों का पहला लक्षण है पढ़ना और पढ़ाना।

प्रश्न - किस बात में ब्राह्मणों को एक्सपर्ट बनना है?
उत्तर - किसी पर भी ज्ञान का रंग चढ़ाने में बहुत-बहुत एक्सपर्ट बनना है।

भल कोई इन्सल्ट करे, गाली दे लेकिन कोशिश करके देखो तो उस पर असर जरूर होगा। पात्र देखकर दान देना है। अविनाशी धन भी व्यर्थ न जाये इसलिये बड़ी खबरदारी चाहिये। पैसा भी किसको सम्भाल से देना है।

प्रश्न - गॉडली स्टूडेन्ट कहाँ नहीं होते?
उत्तर - उन (सांसारिक)स्कूलों में गॉडली स्टूडेन्ट नहीं होते हैं।

प्रश्न - नॉलेज को क्या नहीं कहा जाता है?
उत्तर - बरसात, पानी वा अमृत नहीं कहा जाता।

प्रश्न - दुःख दूर कैसे होते हैं?
उत्तर - नॉलेज से तुम्हारे सब दुःख दूर होते हैं 21 जन्मों के लिये।

प्रश्न - किस बात में नहीं डरना चाहिए?
उत्तर - पाठशाला का नाम ब्रह्माकुमारी पाठशाला रखने से डरना नहीं चाहिये।

प्रश्न - कई बच्चे डर के मारे क्या करते हैं?
उत्तर - बी.के.नाम देख हंगामा न कर दें इसलिये गीता पाठशाला नाम रख देते हैं।

प्रश्न - वास्तव में तुम सब क्या थे?
उत्तर - बन्दर तो तुम सभी थे। सूरत मनुष्य की, सीरत बन्दर की थी।

प्रश्न - कन्यायें क्या कहती हैं?
उत्तर - लाज रखो गिरधारी।

प्रश्न - किसको याद करने से विकर्म विनाश नहीं होते?
उत्तर - देहधारी कृष्ण को याद करने से विकर्म विनाश नहीं हो सकते। ।

प्रश्न - देवता कब बनेंगे?
उत्तर -जब ब्राह्मण बनें और ज्ञान को समझें तब देवता बन सकें।

प्रश्न - भक्ति कब छूटती है?
उत्तर - ब्राह्मण बनने से भक्ति छूट जाती है।

प्रश्न - कन्याओं को माँ-बाप, डॉक्टर आदि क्या कहते हैं?
उत्तर - शादी नहीं करेंगी तो बीमार हो जायेंगी। उनको समझाना चाहिये - अरे, सन्यासी कितने बनते हैं। बहुत छोटे-छोटे ब्रह्मचारी वहाँ रहते हैं। फिर वह ब्रह्मचारी तो कभी बीमार नहीं होते। यहाँ क्यों बीमार होंगे?

प्रश्न - शक्ति कैसे मिलती है?
उत्तर - शिवबाबा के साथ योग लगाने से शक्ति मिलती है।

प्रश्न - समर्पण कब होना होता है?
उत्तर - ज्ञान की धारणा होने के बाद फिर समर्पण होना है।

प्रश्न - ज्ञान की धारणा नहीं होगी तो क्या होगा?
उत्तर - नष्टोमोहा नहीं होंगे तो माया आकर पथकायेगी।

प्रश्न - शादी करने की दिल होगी तो क्या होता है?
उत्तर - फिर सारा ब्रह्माकुमारियों का नाम बदनाम हो जाता है। पहले नष्टोमोहा बनना पड़े।

प्रश्न - यहाँ से गये, मित्र-सम्बन्धियों का मुँह देखा तो क्या होता है?
उत्तर - लट्टू हो बैठ गये। मोह ने घेर लिया।

प्रश्न - सन्यासी घर में वापिस आयें तो क्या होता है?
उत्तर - आसपास वाले निरादर करते हैं। समझते हैं - यह काम के लिये भागा है। यहाँ भी समझा जाता है - यह पूरा नष्टोमोहा नहीं बना था, विकारों ने घेर लिया।

प्रश्न - बाबा के पास कोई .....की तकलीफ नहीं है।
उत्तर - खान-पान की।

प्रश्न - मम्मा-बाबा भी सबको सिखलाने लिये क्या करते थे?
उत्तर - बर्तन मांजते थे। झाड़ू लगाते थे। देह-अभिमान तोड़ने के लिये किया जाता है।

प्रश्न - सन्यासी भी ऐसे कराते हैं। कोई बड़ा आदमी होगा तो उनसे क्या कराएंगे?
उत्तर - लकड़ी आदि कटायेंगे - देह-अभिमान तोड़ने लिये।

प्रश्न - इस राजयोग से क्या बनते हैं?
उत्तर - विश्व का मालिक बनते हैं।

प्रश्न - अभी तो देखो किसकी भक्ति करते हैं?
उत्तर - चूहे-बिल्ली आदि सबकी भक्ति करने लग पड़े हैं।

प्रश्न - किस चीज के कारण मनुष्य किस काम के नहीं है?
उत्तर - ईश्वरीय नॉलेज बिगर मनुष्य तो कोई काम के नहीं हैं।

Attention:-----
अगर किसको दान दिया और उसने कोई विकर्म कर लिया तो उनका पाप उस दान देने वाले पर आ जायेगा। यहाँ बड़ी खबरदारी चाहिये। पैसा तो बड़ी सम्भाल से किसको देना है पूछकर।

प्रश्न - किसकी राशि पर किसका नाम ठीक है?
उत्तर - ब्रह्मा की राशि पर ब्रह्मपुत्रा नाम ठीक है।

प्रश्न - मोस्ट बिलवेड बाप का बनने के लिए क्या करना है?
उत्तर - पहले पूरा-पूरा नष्टोमोहा बनना है।

प्रश्न - सेवा में कब लगना है?
उत्तर - जब अवस्था पक्की हो।

प्रश्न - किस बात में बहादुर बनना है?
उत्तर - इस दुनिया से दिल का वैराग्य रख पवित्र बनने में।

वरदान - शुद्ध फीलिंग द्वारा फ्लू की बीमारी को खत्म कर वरदानों से पलने वाले सफलतामूर्त भव

👉 सभी बच्चों को बापदादा की श्रेष्ठ मत है - बच्चे सदा शुद्ध फीलिंग में रहो।

👉 मैं सर्व श्रेष्ठ अर्थात् कोटों में कोई आत्मा हूँ, मैं देव आत्मा, महान आत्मा, विशेष पार्टधारी आत्मा हूँ - इस फीलिंग में रहो तो व्यर्थ फीलिंग का फ्लू नहीं आ सकता।

👉 जहाँ यह शुद्ध फीलिंग है वहाँ अशुद्ध फीलिंग नहीं हो सकती।

☝ इससे फ्लू की बीमारी से अर्थात् मेहनत से बच जायेंगे और सदा स्वयं को ऐसा अनुभव करेंगे कि हम वरदानों से पल रहे हैं, सेवा में सफलता पा रहे हैं।

स्लोगन - संगमयुगी मर्यादा पुरुषोत्तम बनना - यही ब्राह्मण जीवन का श्रेष्ठ लक्ष्य है

ओम शान्ति